Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

अरब लहर, लोकतंत्र और न्यू मीडिया

Akhlakh Ahmad Usmani*

Research Scholar, Journalism and Mass Communication, Jainarayan Vyas University, Jodhpur

***सार -** 'अरब लहर' यानी 'अरब स्प्रिंग' को हिन्दी- उर्दू में कई नामों से जाना गया। इसे 'अरब बसंत', 'अरब क्रांति' और 'अरब उत्थान' के भी नाम दिए गए। इसका दौर यूँ तो साल 2011 से शुरू हुआ लेकिन आज भी कमोबेश यह व्याप्त है। 'अरब लहर' में सबसे प्रमुख रही जनता की लोकतंत्र या लोकतंत्र में सुधार की माँग। यह अरब के मौसम और भूगोल के हिसाब से परिभाषित की गई और कई जगह इसे प्रायोजित भी बताया गया। फिर भी 'अरब लहर' की सापेक्षता से इनकार नहीं किया जा सकता।*

---------------------------------x--------------------------------

लोकतंत्र की परिभाषा में 'अरब लहर'

लोकतंत्र एक व्यापक शब्द है। इसकी 40 प्रमुख परिभाषाओं से पता चलता है कि "लोकतंत्र" का स्वरूप इसकी "उदारता" में निहित है। राजनीतिक सामुदायिकता और कानून के समक्ष एक जैसे अधिकार लोकतंत्र को व्यापक स्वरूप देते हैं। एक उदार लोकतंत्र में कई तत्वों का समावेश होता है। कई बार इसे देश विशेष का संविधान परिभाषित करता है और कई बार सामाजिक उदारता को राज्य के समर्थन से भी उदार लोकतंत्र के बारे में पता चलता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लोकतंत्र का कोई एकमात्र मान्य रूप नहीं है। यह परिस्थिति, राज्य, सामाजिक बुनावट और समुदाय के क्रियाकलाप से परिभाषित होता है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि 'लोकतंत्र' नहीं परन्तु "लोकतंत्रों" की कोई स्थाई परिभाषा नहीं है। इसी तरह 'लोकतंत्रीकरण' के लिए अपनाए गए मार्ग में लोकतंत्र के लिए प्रयास तो किया जाता है लेकिन इस बात का हमेशा ख़तरा रहता है कि इसका दुष्प्रभाव भी हो सकता है। 'अरब लहर' के संदर्भ में कहीं लोकतंत्र तो कहीं इसका उलटा प्रभाव देखने को मिला। यह देश, भूगोल, आवश्यकता, समाज की बुनावट और सामुदिकता के आधार पर कई स्वरूपों में सामने आया।

'अरब लहर', लोकतंत्र एवं इस्लाम

साल 2011 की शुरूआत में 'अरब लहर' पैदा हुई। तीन प्रमुख अफ्रीकी इस्लामी देशों ट्यूनिशिया, मिस्र और लिबिया में तानाशाहों के मुकाबले जो लोग सत्ता में आए वह लोकतंत्र और इस्लाम की बात करने वाले राजनीतिक दल थे। मूलरूप से नए धर्म के तौर पर इस्लाम में विवाह, सम्पत्ति, अधिग्रहण, राजनीति, सामाजिकता, कराधन समेत राजनीतिक व्यवस्था के बारे में व्यापक स्पष्टता प्रदान की गई। यही वजह रही कि इस्लाम और राजनीति का गहरा संबंध बन गया। अरब के इलाक़े में 1300 साल से व्याप्त इस्लामी धर्मसत्ता ने राजनीतिक पुनर्जागरण के दौर में इस्लामी गणतंत्र या तानाशाही का रुख़ किया। यही तानाशाही क्षेत्र में 'अरब लहर' की वजह बना।

जिस इस्लाम को सत्ता से बाहर रखकर राज्य की कल्पना की गई, गणतंत्र या तानाशाही की हताशा में वही इस्लाम फिर लोगों की आशा का केन्द्र बन गया। "इस्लाम की स्थिति उन नष्ट राष्ट्रों में राजनीतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बन गई जो लोकतंत्रिक संस्थाओं को स्थापित नहीं कर पाए। ... इसलिए बिना नेता और उम्मीद की भीड़ ने इन हालात में क्रांति का रास्ता अपनाया जो नवउदार नीतियों में नाबराबरी, वैश्विक आर्थिक हताशा एवं महगाँई से भोजन के बढ़ते दाम और ग़रीबी के विरुद्ध था।"[1]

'अरब लहर' एवं न्यू मीडिया का संबंध

साल 2010 में ट्यूनिशिया के सिदी बुज़िद शहर के सब्ज़ी बेचने वाले मुहम्मद बुआज़ीज़ी ने जब आत्मदाह किया तो ट्यूनिशिया में यह नई क्रांति का कारक बन गया। लोगों ने बुआज़ीज़ी के समर्थन में जब जुटना शुरू किया तो देखते ही देखते यह क्रांति ट्यूनिशिया से लेकर मिस्र, सीरिया, लीबिया, बहरीन, यमन और अल्जीरिया तक फैल गया। प्रदर्शनकारी किशोर उम्र के नौजवान तकनीकी ज्ञान से परिपूर्ण, वैश्विक नागरिकता में विश्वास रखने वाले अहिंसक नेताविहीन समुदाय था। सत्ताओं को उस समय बहुत आश्चर्य हुआ कि समाज के हर वर्ग के लोग इस तरह के प्रदर्शनों में शामिल हो

रहे हैं। प्रदर्शनकारियों ने इंटरनेट से संचालित न्यू मीडिया से अपनी बात रखी और परम्परागत उत्पीड़न भी सत्ता के काम ना आ सका।[2]

साल 2011 की अरब की सोशल मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक़ 94 प्रतिशत ट्यूनिशियाई और 88 प्रतिशत मिस्री लोगों ने न्यू मीडिया के ज़रिए जानकारी हासिल की। “दोनों देशों की जनता ने राज्य नियंत्रित मीडिया के माध्यमों पर कम विश्वास किया। (ट्यूनिशिया की 40 प्रतिशत और मिस्र की 36 प्रतिशत जनता ने)”[3] यह आश्चर्य की बात है कि जब मिस्र में अरब लहर आई, उस समय जितने अख़बार के पाठक नहीं थे, उससे ज़्यादा मिस्री फेसबुक पर यूज़र के तौर पर मौजूद थे। इसके अलावा ट्वीटर, यू-ट्यूब और ब्लॉग भी लोगों को अरब लहर के बारे में सारगर्भित जानकारियाँ दे रहे थे। अब तक जो न्यू मीडिया के जो प्लेटफॉर्म लोगों के लिए सामाजिकता निभाने के स्थल थे, वह जानकारी और क्रांति के वाहक बन गए थे।

मिस्र में अरब लहर की भूमिका साल 2005 में उसी समय बनी जब संविधान पर जनादेश हुआ और राष्ट्रपति के चुनाव करवाने पड़े। इसके अगले ही साल मिस्र की राजधानी में यौन अपराध की घटनाओं में सेलफोन का योगदान था और लोगों के वीडियो शेयर करने के बाद सरकारी मीडिया और अखबारों को इन अपराधों पर खबरें चलानी पड़ीं।

वर्तमान राष्ट्रपति अब्देल फ़त्ताह ने मार्च 2008 में एक फेसबुक पेज बनाया था जिसमें इसी साल की 6 अप्रैल को सरकारी फैक्ट्री मोहल्ला अलकोबरा में हड़ताल करने का आह्वान किया गया था। पूरे मिस्र में उस वक्त तक सिर्फ़ 7 लाख 90 हज़ार ही फेसबुक यूज़र थे लेकिन इस अपील के बाद दो ही सप्ताह में उनके पेज के साथ 70 हज़ार लोग जुड़ गए।[4]

नोबल शांति पुरस्कार विजेता मुहम्मद अलबरदाई फरवरी 2010 में जब तत्कालीन राष्ट्रपति हुस्नी मुबारक के ख़िलाफ़ मिस्र लौटे तो उनके सोशल मीडिया की कमान वाइल ग़ोनिम ने संभाली। वाइल गूगल के अरब के विपणन के प्रमुख पद से इस काम के लिए नियुक्त हुए थे। उन्होंने अलबरदाई के संगठन ‘नेशनल एसोसिएशन फॉर चेंज’ के लिए काम शुरू किया।[5]

आखिरकार 25 जनवरी 2011 को वाइल के प्रयास से तहरीर स्क्वायर पर लाखों लोग जमा हुए। इसके लिए फेसबुक, ट्वीटर और फेसबुक को इस्तेमाल किया गया। एक नागरिक वीडियो यू-ट्यूब चैनल बनाया गया जिसे ‘सिटीज़न ट्यूब’ नाम दिया गया। राष्ट्रपति हुस्नी मुबारक सरकार के पुलिसिया दमन और आपातकाल के विरोध में लाखों मिस्रियों ने न्यू मीडिया के माध्यम से क्रांति का नया इतिहास लिखा। जिसकी परिणिती में बाद में हुस्नी मुबारक को सत्ता छोड़नी पड़ी।

सन्दर्भ सूची

1. फ़ॉरम, ब्लेड स्ट्रेटेजिक, विदेश मंत्रालय, स्लोवेनिया गणतंत्र का शोध पत्र, 2012, पृष्ठ 2
2. स्टेपानोवा, इकातेरीना, “द रोल ऑफ इन्फॉर्मेशन कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजीज़ इन द अरब स्प्रिंग, इम्प्लीकेशंस बियोंड द रीजन”, 2011, पृष्ठ 159
3. अलागुई, इलहाम, “मल्टीपल मिरर्स ऑफ़ द अरब डिजिटल गैप”, ग्लोबल मीडिया जरनल, 2009, पृष्ठ 14
4. फिलियु, जीन पियेरे, “द अरब रिवोल्यूशन: टेन लेसंस फ्रॉम द डेमोक्रेटिक अपराइज़िंग”, 2011, पृष्ठ 47
5. तग़यीर डॉट नेट, 2012, पृष्ठ इंटरनेट

Corresponding Author

Akhlakh Ahmad Usmani*

Research Scholar, Journalism and Mass Communication, Jainarayan Vyas University, Jodhpur

usmaniakhlaq@yahoo.com